समर्थ स्वरूप बनने की स्मृतियां

❋ सदा स्मृति रहे कि मैं पतित आत्माओं के पतित संकल्पों, वृतियों और दृष्टि को भस्म करने वाला मास्टर ज्ञानसूर्य हूँ।

❋ निराकारी स्थिति में स्थित हो, निरंहकारी बनो तो निर्विकारी बन जायेंगे।

❋ आत्मा-आत्मा भाई-भाई की दृष्टि रखो तो क्रिमिनल ख्यालात खत्म हो जायेंगे।

❋ लंबे समय से एक सेकेण्ड में शरीर से न्यारे हो जाने का अभ्यास लास्ट पेपर में नम्बरवन में पास कर देगा।

❋ तीसरा ज्वालामुखी नेत्र सदा खुला रहे तो माया शक्तिहीन हो जाएगी।

❋ सदा याद रखो कि सब अच्छे हैं, सबकी विशेषता देखो - बाप ने निमित बनाया है, बाप ने चुना है तो जरूर कोई विशेष विशेषता होगी।

❋ अगर बाप के लव में लीन रहो तो दूसरों को सहज ही आप समान बना सकते हो, उनके भाग्य को जगा सकते हो।

❋ एक दिन आएगा जब बच्चे बहुत योग में रहेंगे, याद में मस्त हो जायेंगे, कामकाज करते याद में रहना ही बहादुरी है।

❋ दुआंए लेने का सहज साधन है : सदा हां जी का पाठ पक्का करो। स्मृति में रहे कि मैं बाप समान मीठा हूँ।

❋ सदा स्वमान में रहो तो सर्व खजाने स्वतः ही जमा होते जायेंगे।

❋ योगी वही है जिसने अहंकार को मारा हो ..... निरहंकारिता को स्वीकारा हो।

❋ अमानत में ख्यानत छोड़ रूहानियत और रूहाब में रहो, अपने ऊपर रहम करो, हे अर्जुन बनो।

❋ शरीर भले चला जाए लेकिन खुशी कभी न जाए, राजयोगी अर्थात् बाबा कहा और योग लगा।

❋ यदि व्यर्थ संकल्प ज्यादा चलते हैं तो कम से कम चार बार मुरली पढ़ो तो व्यर्थ संकल्पों से मुक्त हो जायेंगे।

❋ अभी महातपस्वी बन आत्माओं को रूहानी चैन का अनुभव कराओ।

❋ दिन रात अन्दर में बाबा बाबा चलता रहे तो अपार खुशी रहेगी।

❋ भगवान और भाग्य के गीत गाते रहो तो निरन्तर सहजयोगी बन जायेंगे।

❋ परमात्म यादों की मस्ती में यह जीवन अच्छा लगता है।

❋ वरदानीमूर्त बनने के लिए दो बातें - दाता बनो और समाते जाओ।

❋ तपस्वीमूर्त अर्थात् लाइट हाउस, माइट हाउस बन चारों ओर शान्ति, शक्ति की किरणें फैलती जायें।

❋ अपने को जिम्मेवार समझने से ही आलस्य और अलबेलापन समाप्त होता है।

❋ अन्तर्मुखी और एकान्तवासी स्थिति में स्थित रहने वाले ही सम्पूर्णता के नजदीक हैं।

❋ अभी तपस्वीस्वरूप की मंजिल की तरफ भागो। तपस्वीमूर्त बन विश्व का कल्याण करो, उद्धार करो।

❋ तपस्वीमूर्त के दर्शन मात्र से ही सेवा हो जाती है, उनकी दृष्टि, शान्तमूर्त चेहरा भी सेवा का काम करेगा।

❋ सबसे श्रेष्ठ सेवा है वातावरण को शक्तिशाली, श्रेष्ठ बनाना।

❋ पांच तत्वों के आकर्षण से परे रहना ही महारथियों के लिए महीन पुरूषार्थ है।

❋ सुख, साधन, पैसे में फंसे तो आत्मा की सारी की हुई कमाई चट हो जाएगी।

❋ स्वभाव में सरलता और पुरूषार्थ में अटेन्शन रखकर चलो तो नम्बर वन में आ जायेंगे।

❋ ओम् शान्ति ❋